भूमिका

प्रेरणा और पृष्ठभूमि

भारत सांस्कृतिक विविधताओं से भरा देश है। यहाँ अनेक पर्यटक स्थल हैं, जिनसे भारत के सांस्कृतिक पर्यटन का स्वरूप बना है। जम्मू एवं काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उतराखंड, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, आंध प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात, असम, मेघालय, मिजोराम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणिपुर आदि भारत के सभी राज्यों में सांस्कृतिक पर्यटन का निरंतर विकास हो रहा है, लेकिन अभी भी उन्नति की अपार संभावनाएँ हैं।

संस्कृति मानव जीवन का निर्माण करने वाला सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। संस्कृति में परंपराएँ, जीवन शैली, लोक विश्वास, सामाजिक जीवन, कलाओं के विविध रूप, लोकोत्सव और त्योहार, लोक खेल आदि आते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने देश की संस्कृति व विरासत से परिचित होना चाहता है। इसी प्रकार दूसरे देशों के लोग भी अलग-अलग

देशों की संस्कृति के बारे में जानना पसंद करते हैं। संस्कृति में ही हमारे आचार-विचार और नैतिक मूल्य छिपे होते हैं। संस्कृति का विकास हम पीढ़ी दर पीढ़ी अनुभव करते रहते हैं। इससे हमें पता चलता है कि हम किन मूल्यों को खो रहे हैं और किन मूल्यों को अपना रहे हैं। इस संदर्भ में बदलते परिवेश के साथ-साथ तकनीकी विकास पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्तमान समय इतना नवीन हो गया है कि अपनी-अपनी संस्कृतियों को पहचानने में भ्रम होता है। भारत प्राचीन संस्कृतियों का देश है,जिसका निर्माण ऋषि-मुनियों द्वारा किया गया है। उन्होंने अपने विचार पुस्तकों तथा धार्मिक संस्थानों की स्थापना के माध्यम से व्यक्त किए। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करने के लिए अपनी भाषा का प्रयोग किया। आज के बदलते परिवेश के साथ इन पुस्तकों का अनुवाद तथा अध्ययन-अध्यापन ज़रूरी है। अनुवाद के माध्यम से प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों को आसानी से समझा जा सकता है और उन्हें दूसरों तक आसानी से संप्रेषित किया जा सकता है। सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों पर भाषाई समस्या अधिक दिखाई देती है, क्योंकि वहाँ आने वाला प्रत्येक व्यक्ति वहाँ की संस्कृति को अपनी भाषा में समझना चाहता है। इसके लिए पर्यटक को स्थानीय भाषा में काही गई बातों को समझना पड़ेगा। यह एक समस्या है। इस समस्या को दूर करने के लिए पर्यटक गाइड की सहायता लेता है, जो अनुवाद और निर्वचन की सहायता से अपना कार्य करता है।

सांस्कृतिक-पर्यटन का भाषा, अनुवाद और निर्वचन से गहरा संबंध है। हम कह सकते हैं कि इनके बिना कोइ भी पर्यटन संभव नहीं है। पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों की सहायता के लिए जो गाइड उपलब्ध रहते हैं, वे अनुवाद और निर्वचन के सहारे पर्यटकों को उन स्थानों, और वहाँ से जुड़ी संस्कृति की जानकारी प्रदान करते हैं। जो गाइड अनुवाद और निर्वचन में जितना कुशल होता है, वह उतना ही सफल और लोकप्रिय गाइड होता है। उसकी योग्यता के हिसाब से ही उसकी आय भी निर्धारित होती है। पर्यटन का प्रबंधन करने वाली सरकारी और गैर सरकारी एजेंसियाँ कुशल गाइड पाने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करती हैं। वहाँ से प्रशिक्षित गाइडों से आशा की जाती है कि वे भाषा के साथ ही अनुवाद और निर्वचन में भी अच्छे होंगे। अनुवाद और निर्वचन सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के प्रमुख साधन हैं।

असम भारत के पूर्वोत्तर अंचल का महत्वपूर्ण राज्य है। यह सांस्कृतिक दृष्टि से विविधता भरा और बहुत महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि 'असम' शब्द संस्कृत के 'असोमा' से बना है, जिसका अर्थ है “अनुपम” अथवा “अद्वितीय”। आस्ट्रिक, मंगोलियन, द्रविड और आर्य आदि जातियाँ प्राचीन काल से ही असम क्षेत्र में निवास करती हैं। इन सबने यहाँ की संस्कृति के विकास में अपना योगदान किया है। प्राचीन काल में असम को 'प्राग्ज्योतिष' अथवा 'पूर्वी ज्योतिष' कहा जाता था। बाद में इसका नाम ‘कामरूप’ पड़ा। राजा कुमार भास्कर वर्मन के निमंत्रण पर महान

चीनी विद्वान यात्री 'ह्वेनत्सांग' लगभग 749 ई.वीं में भारत में आए थे। उन्होंने असम के "कामरूप"नाम का उल्लेख किया है। 12वीं शताब्दी के अरब इतिहासकर अलबरूनी की पुस्तक में भी कामरूप का उल्लेख मिलता है। असम को सामाजिक वैविध्य और इसके सांस्कृतिक गौरव के लिए विश्व भर में जाना जाता है।असम का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार 'बिहू' धूमधाम से मनाया जाता है। असम की संस्कृति का रंग-बिरंगा चित्र वहाँ की जनजातियों में भी देखने को मिलता है, क्योंकि असम राज्य की जनजातियों की अलग-अलग परंपराएँ हैं। कार्बी जनजाति असम के पूर्वी क्षेत्र लखीमपुर तथा सदिया जिले के आसपास रहती है। ये अपने घरों को जमीन से 5 फुट ऊपर बनाते हैं। यह विशिष्ट कलाकृति का नमूना होता है। मोरान जनजाति की भी अपनी विशेष संस्कृति है, यह जनजाति कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी करती है। यह लखीमपुर जिले से लेकर गुवालपरा तक तथा मेघालय राज्य के कुछ हिस्सों में रहती है। यह अपना घर समतल मैदान पर बाँस एवं मिट्टी से बनाती है। इसकी महिलाएँ रंगीन कपड़े एवं मेखला बुनती हैं। इनके अलावा कई अन्य महत्वपूर्ण जनजातियाँ हैं, जैसे- शिवसागर, जोरहाट और शोणितपुर जिले में देवरी ,तिनसुकिया जिले में मटक, चूतिया, शिवसागर व जोरहाट में मिसिंग, कोकराझार, तरंग और कामरूप जिले मे बोडो जनजाति निवास करती है। इन सबकी अपनी-अपनी परम्पराएँ हैं। असम के कामरूप के नीलांचल पर्वत पर कामाख्या देवी का मंदिर है। इसके अलावा वशिष्ठ आश्रम भी एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। उसी प्रकार तेजपुर असम की सांस्कृतिक राजधानी मानी जाती है। माना जाता है कि तेजपुर में कभी कृष्ण और शिव के युद्ध के कारण खून की नदियाँ बही थीं। जिसके कारण इसका नाम शोणितपुर (तेजपुर) पड़ा। तेजपुर में स्थापित चित्रलेखा उद्यान व अग्निगढ़ प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। यह स्थान कृष्ण के पोते अनिरुद्ध और उसकी प्रेमिका उषा की कहानी के लिए विख्यात है। उसी प्रकार उषा की सखी के नाम से 'चित्रलेखा उद्यान' है। असम अपने सांस्कृतिक पर्यटन के साथ-साथ ऐतिहासिक पर्यटन के लिए भी विख्यात है। शिवसागर के ऐतिहासिक स्थलों पर असम की संस्कृति दिखाई देती है। शिवसागर में शिव मंदिर, विष्णु मंदिर एवं दुर्गा के मंदिर भी हैं। यहाँ जय दल, रंग घर,जैसे राजा-महाराजाओं के घरों का परिचय मिलता है। असम में संसार का सबसे बड़ा द्वीप 'मंजुली' (माजुलि) है। यहाँ के मंदिरों का निर्माण शंकरदेव एवं उनके शिष्य माधवदेव द्वारा किया गया था। असम हस्तशिल्प एवं हथकरघा का प्रमुख केंद्र है। यहाँ बाँस, बेंत व मिट्टी के खिलौने आदि बनाए जाते हैं। उसी प्रकार पाथ, मूंगा, रेशम आदि असम राज्य में पाए जाते हैं। असम के पर्यटन स्थलों में सबसे अधिक अनुवादकों और निर्वचकों की आवश्यकता है, ताकि वे विभिन्न राज्यों एवं देशों से आए पर्यटकों को उनकी भाषाओं में अनुवाद एवं निर्वचन द्वारा असम की संस्कृति के विषय में आसानी से समझा सकें। असम में इस भाषाई समस्या को

दूर करने में सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इसके अलावा भाषागत सुविधा को बढ़ाने के लिए विदेशी भाषाओं का भी प्रशिक्षण अच्छा किया जा सकता है। इन सब कारणों से शोधार्थी ने असम के सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में अनुवाद एवं निर्वचन की भूमिका के अध्ययन एवं विश्लेषण को लघु शोध कार्य के लिए चुना है।

शोध की केंद्रीय समस्या एवं प्रश्न

प्रस्तुत लघु शोध कार्य का विषय **'सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में अनुवाद और निर्वचन की भूमिका (असम के संदर्भ में)'** है। इसमें 'सांस्कृतिक पर्यटन के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद एवं निर्वचन की स्थिति तथा चुनौतियों का अध्ययन' केंद्रीय समस्या है। केंद्रीय समस्या का व्याप्ति-क्षेत्र पूर्वोत्तर का असम राज्य है। इस शोध समस्या से संबंधित प्रश्न निम्नांकित हैं -

- असम के सांस्कृतिक पर्यटन का स्वरूप कैसा है ?
- अनुवाद और निर्वचन का सांस्कृतिक पर्यटन से क्या संबंध है ?
- असम के सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में भाषाई समस्याका स्वरूप क्या है?
- असम के सांस्कृतिक पर्यटन के क्षेत्र में अनुवाद और निर्वचन के प्रयोग की वर्तमान स्थिति कैसी है ?
- असम के सांस्कृतिक पर्यटन, अनुवाद, निर्वचन और असम की अर्थ-व्यवस्था का क्या संबंध है ?
- असम में सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के लिए अनुवाद व निर्वचन को बढ़ावा देने के कौन- से उपाय हैं?

शोध का उदेश्य

- शोध की केंद्रीय समस्या और उससे जुड़े प्रश्नों का अध्ययन और विश्लेषण।

- सांस्कृतिक पर्यटन से जुड़े स्थलों एवं स्थानीय उत्पादों की जानकारी एकत्र करना, ताकि उसका अनुवाद एवं निर्वचन में उपयोग किया जा सके।
- असम के सांस्कृतिक जीवन से संबंधित शब्दावली का संग्रह एवं अनुवाद एवं निर्वचन में उसके उपयोग की संभावनाएँ खोजना।
- अध्ययन और विश्लेषण के निष्कर्षों के आधार पर असम के सांस्कृतिक पर्यटन के क्षेत्र में भावी शोध कार्य की संभावनाओं का पता लगाना।

सामग्री संकलन

प्रस्तुत लघु शोध विषय के लिए निम्नांकित स्रोतों से सामग्री का संकलन किया गया :

- पुस्तकालय
- असम का संस्कृति विभाग
- असम के पर्यटन-कार्यालय
- पर्यटन गाइड
- पर्यटक
- समाचारपत्रों के संपादक
- ई-स्रोत

साहित्य पुनरावलोकन

पर्यटन, पर्यटन स्थल, असम की संस्कृति, ऐतिहासिक स्थल आदि के विषय में जानकारी देने वाले हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा में अनेक ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाएँ प्राप्त हैं, जैसे- भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक पर्यटन (सुरजीत सिंह), पर्यटन के सिद्धांत (राजेश गोयल), पर्यटन विकास (विनोद अग्रवाल), पर्यटन के सिद्धांत (सुरजीत सिंह),वशिष्ठ देवालय(विनोद शर्मा), पुण्यभूमि कमाख्या(प्रतिमा मजूमदार), उलूपी (रविशंकर रवि) फोकस पूर्वोत्तर(सुशील चौधरी), Culture of Religions of Assam (Kuriala Chittukalam Sdb), The Abode of the Original

(Kamal Charu Hazarika), Assam Its Heritage and Culture (Chandra Bhushan). इसके अतिरिक्त असमीया भाषा में भी पर्याप्त सामग्री इन विषयों पर उपलब्ध है। इन सभी पुस्तकों व पत्रिकाओं से शोधार्थी को सहायता मिली है, लेकिन उनमें अनुवाद और निर्वचन की भूमिका का विश्लेषण उल्लेख देखने को नही मिलता और न ही असम के सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में अनुवाद और निर्वचन की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शोधार्थी का संदर्भित विषय पर किया गया यह कार्य नवीन और मौलिक है तथा अब तक की जानकारी के अनुसार अनुवाद अध्ययन में पहला है।

शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत लघु शोध कार्य की सीमा में शोध की केंद्रीय समस्या से संबंधित प्रश्न और शोध के उद्देश्य से संबंधित पक्ष हैं। इनका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। यही इस शोध-कार्य की सीमा है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए एकत्र आंकड़ों, सूचनाओं, साक्षात्कारों के उपयोग के लिए विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक व सांस्कृतिक जानकारियाँ देने के लिए विवरणात्मक प्रविधि अपनाई गई है। तथ्य और नामावली प्रस्तुत करने के लिए सारणी पद्धति का प्रयोग किया गया है।

शोध-कार्य का परिचय

प्रस्तुत लघु शोध कार्य चार अध्यायों में विभक्त है :

प्रथम अध्याय में सांस्कृतिक पर्यटन को परिभाषित करते हुए असम के सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों और सांस्कृतिक विविधताओं का उल्लेख किया गया है। सांस्कृतिक पर्यटन में अनुवाद और निर्वचन की आवश्यकताका विश्लेषण भी किया गया है।

द्वितीय अध्याय में असम के सांस्कृतिक पर्यटन में अनुवाद एवं निर्वचन की भाषाई भूमिका का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में असम की सांस्कृतिक शब्दावली उसके हिंदी रूप और अर्थ/व्याख्या के साथ प्रस्तुत की गई है।

पर्यटक गाइड को अनुवाद एवं निर्वचन में उसके प्रयोग का महत्व भी समझाया गया है। इस शब्दावली से असम की सांस्कृतिक संपन्नता के साथ-साथ असम के सांस्कृतिक पर्यटन में अनुवाद और निर्वचन के महत्व को दर्शाया गया है।

तीसरे अध्याय में सांस्कृतिक पर्यटन, अनुवाद और निर्वचन के आर्थिक पक्ष का विवेचन किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत असम के सांस्कृतिक पर्यटन से जुड़े पर्यटक, पर्यटन विभाग, पर्यटक गाइड, यातायात से जुड़े लोग, होटल और यात्री निवास तथा स्थानीय बाजारों से क्षेत्रों जुड़े वर्ग के लोगों द्वारा अनुवाद और निर्वचन के प्रयोग तथा उसके आर्थिक लाभ का विश्लेषण किया गया है। असम के सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों से जुड़े लोगों के आर्थिक विकास में अनुवाद और निर्वचन की भूमिका का इससे पता चलता है।

चतुर्थ अध्यायके अंतर्गत असम के सांस्कृतिक पर्यटन में अनुवाद और निर्वचन स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। असम राज्य के पर्यटन में अनुवाद और निर्वचन की वर्तमान स्थिति एवं समस्याएँ, भाषगत समस्याएँ और उसके स्वरूप, पर्यटक गाइडों की संख्या और उनके द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषाएँ और पंजीकृत पर्यटकों की संख्याओं तथा समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। असम के सांस्कृतिक पर्यटन में आने वाली भाषाई समस्याओं के समाधान और अनुवाद एवं निर्वचन को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक पर्यटन को विकसित करने के लिए सुझाव भी दिए गए हैं।

संभावनाएँ और उपयोगिता

प्रस्तुत शोध कार्य कई संदर्भों में संभावनाशील और उपयोगी सिद्ध होगा। यह अनुवाद अनुशासन को सांस्कृतिक क्षेत्र में एक नवीन आयाम देगा और असम के सांस्कृतिक पर्यटन के विविध पक्षों को अनुवाद अनुशासन से जोड़कर अनुवाद कार्य के मूल्यांकन को प्रोत्साहित करेगा। इस शोध कार्य से पर्यटन में अनुवाद की भूमिका का जो विवेचन किया गया है, उससे अनुवाद अनुशासन को विस्तार पाने का अवसर प्राप्त होगा। यह शोध कार्य असम के सांस्कृतिक पर्यटक स्थलों पर प्रयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं के महत्व से परिचित करवाएगा, जिससे भाषा के जानकारों के लिए रोजगार की संभावनाओं का पता चलेगा। यह शोध असम के सांस्कृतिक स्थलों पर आने वाली भाषाई समस्याओं से परिचित करवाएगा जिससे उन समस्याओं का समाधान मिल सके। इससे अनेक शोधार्थियों को शोध की प्रेरणा मिलेगी।

आभार-ज्ञापन :

शोधार्थी द्वारा अपने लघु शोध कार्य से संबंधित सामग्री संकलन के उदेश्य से असम राज्य के शिवसागर पर्यटन कार्यालय, ताई संग्राहलय, शिवमंदिर, रंगघर, कोरेंगघर, तलातर घर, जयमती पुखरी, माजुली, तेज़पुर पर्यटन कार्यालय, अग्निगढ़, चित्रलेखा उद्यान, हाजो पुवामक्का, गुवाहाटी पर्यटन कार्यालय, ए.टी.डी.सी, पर्यटक यात्री निवास, विभिन्न संग्रहालय, कलाक्षेत्र, कामाख्या, वशिष्ठ आश्रम, चिड़िया घर, आदि की अध्ययन-यात्रा की गई।

शोधार्थी ने अपने शोध कार्य हेतु संस्कृति विभाग के मंत्री एवं अन्य लोगों से साक्षात्कार लिया। प्रश्नावली पद्धति का प्रयोग करके आँकड़ों का संकलन किया है। संग्रहालय एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों पर जाकर छाया चित्र लिए तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सूची प्राप्त की। इसके अलावा पर्यटन गाइडों, होटलों की सूची और आवश्यक मानचित्र प्राप्त किए गए। इस सामाग्री को उपलब्ध कराने वाले व्यक्तियों, कार्यालयों और संस्थाओं के प्रति शोधार्थी आभार प्रकट करता है।

लघु शोध-कार्य में सहायता हेतु विशेष आभार :

विभागीय प्राध्यापक :

1. डॉ.अन्नपूर्णा चर्ल
2. डॉ.अनवर अहमद सिद्दीकी
3. डॉ. रामप्रकाश यादव
4. डॉ. हरप्रीत कौर
5. श्री. गोपालराम

विभागीय पोस्ट डॉक्टरल फैलो :

- डॉ. मिलिंद पाटिल

शोधार्थी के मित्र :

1. श्री जीतेंद्र
2. श्री आशुतोष कुमार विश्वकर्मा
3. सुश्री गोदावरी ठाकुर
4. सुश्री दिव्या गुप्ता
5. श्री यदुवंश प्रणयन
6. श्री देवेंद्र यादव
7. श्री अमित मिश्रा
8. श्री रत्नसेन भारती

निवेदन

प्रस्तुत शोध कार्य पूरी ईमानदारी और परिश्रम से किया है तथा शोधार्थी द्वारा अपना यह लघु शोध कार्य पूरी निष्ठा और विश्वास के साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की एम.फिल. उपाधि हेतु निर्धारित मूल्यांकन-प्रक्रिया में सम्मिलित करने हेतु प्रस्तुत है।

शोधार्थी

उज्ज्वल डेका बरुआ
(एम.फिल.) अनुवाद अध्ययन
पंजीयन सं : 2015/04/219/002

दिनांक : 06/02/2017